ARYAVART SHODH VIKASH PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 84-86
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-8, No.-II, Issues-IX YEAR- Dec-2017

हिंदी का वैश्विक संदेश

कंचन सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर– हिंदी विभागाध्यक्ष, दयानंद आर्य कन्या डिग्री कालेज, मुरादाबाद (उ0प्र0) भारत

हमारा देश भारत विश्व की बची हुई प्राचीनतम सभ्यताओं का प्रतिनिधित्व करने वाली श्रेणी में आता है। इस सभ्यता का जन्म एवं विकास की गाथा मानव सभ्यता के इतिहास को प्रतिबिंबित एवं परिलक्षित करती है। भारत शब्द दो शब्दों के मेल से बना है – 'भा' 'रत' । "भा" यानी ज्ञान , "रत" यानी लगा हुआ। अर्थात ज्ञान में तल्लीन या ज्ञान में लगे हुए लोगों का देश। इस ब्रह्मांड में काल वह अलौकिक शक्ति है जिसने एक से बढ़कर एक महान सभ्यताओं को देखा है, परखा है, उन्हें नष्ट कर दिया या मुड़ने पर मजबूर कर दिया । भारतीय सभ्यता भी इससे अछूता नहीं रहा है परंतु यहां के लोग, यहां की भाषा, संस्कृति एवं परंपराओं ने काल के झंझावातों को झेलते हुए भी अपने मूल स्वरूप को बचाए रखा है। काल की कसौटी पर यदि मानव सभ्यता को रखा जाए तो काल का अंतराल निम्न शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है – कठिन परिस्थितियां महान व साहसी लोगों को जन्म देती है, महान व साहसी लोग अच्छे वक्त का निर्माण करते हैं, अच्छा वक्त कमजोर एवं कायर लोगों को जन्म देता है, कमजोर व कायर लोग कठिन परिस्थितियों को जन्म देते हैं। काल के भवर में यह देश, इस देश के लोग एवं संस्कृति ने उन सभी मुसीबतों का सामना किया है जिसके सामने महान प्राचीन सभ्यताएं जैसे बेबिलोनिया, सुमेरियन, मायन, रोमन आदि सभ्यताएं नष्ट हो गई परंतु सनातन सभ्यता एवं संस्ति अपने दिव्य ज्ञान शक्ति की बदौलत पुनः प्रतिष्ठा की ओर अग्रसर है जो मानव सभ्यता के अपने विकास के लिए अपरिहार्य है।

भाषा केवल भाव अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होती वरन अपने देश, समाज, संस्कृति एवं सभ्यता की संवाहक भी होती है। सर्जना की विधा कोई भी हो उसकी समृद्धि भाषा की ही समृद्धि है। कथाकार चित्रा मुद्गल कहती हैं "हिंदी का मतलब है भारत"। प्रवासी भारतीय हिंदी को महज एक भाषा नहीं वरन अपनी सांस्कृतिक सामाजिक अस्मिता की वाहक मानते हैं। डॉ. कामता कमलेश लिखते हैं "हिंदी मात्र साहित्य की चीज नहीं है वरनहृदय को जोड़ने वाली ऊर्जा है और प्रेम की गंगा भी"। आज वैश्वीकरण के दौर में जब पूरा विश्व एक मंच पर आ चुका है, तब हिंदी प्रेमी विदेशियों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। विदेशी हिंदीसेवियों में नेपाल के धूस्वाँ सायमी, केदारमान 'व्यथित', प्राहा के डॉ. ओदोलेन स्मैकिल, रोमानिया के इमरे बंगा तथा निकोलाया ज्चेर्या अमेरिका के डॉ. माइकल सी. शपीरो एवं रूपर्ट स्नैल, रूस के प. आ. बारान्निकोव एवं डॉ. येवमेनी चेलीशेव, बर्मा के ऊ– पारगू, बेल्जियम के फादर कामिल बुल्के, जापान के डॉ. टोमियों मिजोकामि एवं प्रोफेसर क्यूया दोई, इटली के प्रोफेसर जोर्जो मिलानेत्ति, न्यूजीलैंड के डॉ. रोनाल्ड स्टुअर्ट मैकग्रेगर,जर्मनी के डॉ. लोथार लुत्से, कनाडा के डॉ. कैथरिन जी. हैन्सन, ऑस्ट्रेलिया के डॉ. रिचर्ड के. बार्ज, डेनमार्क के प्रोफेसर फिन थीसनय हंगरी की मारिया नेज्यैशी, इंग्लैंड के एफ. एस. ग्राउज, के अतिरिक्त जे. फर्ज्युसन, जे. वी. गिलक्राइस्ट और डॉ. अब्राहम जॉर्ज ग्रियर्सन के नाम भुलाए नहीं जा सकते।फ्रेंच विद्वान गार्सा द तासी ने सर्वप्रथम हिंदी साहित्य का इतिहास लिखा। बीजिंग के डॉ. चीनशेंग एवं प्रोफेसर जिन दिगहान हिंदी के लिए निरंतर सक्रिय रहे।हिंदी भाषा के प्रति अपनी गहरी आस्था और विश्वास को प्रदर्शित करते हुए फादर कामिल बुल्के ने बार–बार इस बात को दोहराया है कि हिंदी ही समस्त सांस्कृतिक, सार्वजनिक और साहित्यिक जीवन को वहन कर सकती है। अपने देश की भाषाओं को ठुकरा कर विदेशी भाषाओं को स्वीकार करना भारत जैसे गौरवशाली देश के स्वाभिमान पर आघात करना है। वे हिंदी के सामर्थ्य के प्रति आश्वस्त थे। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि हिंदी भविष्य में भारत की एकमात्र निर्विकल्प भाषा बन सकेगी।

हिंदी साहित्य भारतीय बाजार भारतीय सिनेमा के प्रति वैश्विक लोकप्रियता हिंदी व हिंदुस्तान से निरंतर बढ़ती ही रही है। आज विश्व भर के अनेकों विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है, हिंदी ने विश्व पत्रकारिता में भी स्वयं को स्थापित किया है। डेनमार्क की प्रवासी हिंदी लेखिका अर्चना पैन्यूली के शब्दों में "आज काफी प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य प्रचार में संलग्न है। हम सभी को मालूम है कि जिन मुल्कों में हिंदुस्तानी संख्या में काफी हैं जैसे ब्रिटेन, अमेरिका, फिजी, मॉरीशस, सूरीनाम आदि वहां आए दिन गोष्ठियों सम्मेलनों व हिंदी साहित्य के रचनात्मक अभियान के तहत प्रवासियों ने हिंदी की कई वेबसाइट व वेब मैगजीन जैसे – 'अभिव्यक्ति', 'अनुभूति', 'श्रद्धांजलि', 'अन्यथा' आदि विकसित की हैं। लंदन में 'पुरवाई' ओसलो से 'शांतिदूत' व 'स्पेल दर्पण' पत्रिकाओं का संपादन, प्रकाशन हो रहा है। आज कई विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी ही नहीं बल्कि कई क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं का अध्ययन हो रहा है"। आज विश्व भर के

अनुरूपी लेखक

अनेकों विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। हिंदी ने विश्व पत्रकारिता में भी अपनी पैठ बना ली है। फिजी की 'फिजी टाइम्स', 'हिंदी शांतिदूत' , मारीशस की 'वसंत स्वदेश' , 'आक्रोश इंद्रधनुष', इंग्लैंड की 'पुरवाई', अमेरिका की 'सौरव' और विश्व विवेक कनाडा की 'हिंदी चेतना' आदि आदि अनेकानेक पत्रिकाएं। हिंदी साहित्य का अनेकानेक भाषाओं में अनुवाद, भारतीय संस्ति के प्रति उनके लगाव व विश्वास को ही प्रदर्शित करता है। अप्रवासी हिंदी कथाकार अपनी रचनाओं में भारतीय सभ्यता व संस्ति को बड़ी ही शिद्दत से प्रदर्शित करते हैं। अमेरिका में हिंदी कहानी लगभग 50 वर्षों का सफर तय कर चुकी है। डॉ वेद प्रकाश, बटुक सुनीता, जैन गुलाब खंडेलवाल, उषा प्रियंवदा जैसे वरिष्ठ साहित्यकारों ने जहां अमेरिका में हिंदी का रोपण किया तो वही समकालीन साहित्यकारों ने उसे उत्तरोत्तर विकसित करने का कार्य किया। 'अंजना संधीर' के नाम लिखे गए उषा प्रियंवदा के खत का अंश वहां के हिंदी साहित्यकारों के संघर्ष और विजय का खुलासा करते हैं। ब्रिटेन की 'कीर्ति चौधरी', 'उषा राजे सक्सेना', 'दिव्या माथुर','इरा सक्सेना', 'सलमा जैदी', 'तेजेंद्र शर्मा' आदि अनेक–अनेक कथाकारों ने हिंदी को विश्व पटल पर स्थापित करने में अपना योगदान दिया है। आज विश्व में हिंदी निरंतर अपना प्रचार–प्रसार कर रही है। भाषाई विशेषज्ञों की मानें तो अंग्रेजीयत के इस दौर में हिंदी ने अपनी ब्रांडिंग बना ली है जो हिंदी भाषा की बड़ी उपलब्धि है। इसके द्वारा भी भारत और भारतीयता का प्रचार प्रसार विश्व में तीव्र गति से हो रहा है।

आज हिंदी नई प्रौद्योगिकी के सहारे माइक्रोसॉट, गूगल, याहू, एवं ओरेकल जैसी विश्वस्तरीय कंपनियों में अपनी जगह बना रही है। ईमेल, ई–कॉमर्स, ई बुक, इंटरनेट ब्लॉगिंग, व्हाट्सएप, एवं फेसबुक वेब जगत में बड़ी सहजता से देखा जा सकता है। ''सूचना तकनीक से संबंध हर बड़ी विदेशी कंपनी चाहे माइक्रोसॉट या एप्पल हो गूगल फेसबुक और नोकिया अथवा सोनी वे सब हिंदी के महत्व को समझ चुकी हैं। वे जानती हैं कि भारत के गांव–गांव के हर घर–घर तक पहुंचता है तो सामग्री स्थानीय भाषा में ही देनी होगी, लेकिन बाहरी कंपनियों का यह हाल होने के बाद भी अपने ही देश के महाप्रबंधक गण अपने आप को बदलने को तैयार नहीं हैं''।

भारतीय सिनेमा के माध्यम से भी हिंदी को वैश्विक स्तर पर विशेष प्रचार प्रसार मिल रहा है। आज अनेक फिल्मकार भारत ही नहीं बल्कि यूरोप, अमेरिका, और खाड़ी जैसे देशों के अपने दर्शकों को ध्यान में रखकर फिल्में बना रहे हैं और हिंदी सिनेमा ऑस्कर तक पहुंच रहा है। वैश्विक स्तर पर हिंदी की यह विशेष उपलब्धि है।हिंदी के प्रचार प्रसार में विश्व हिंदी सम्मेलनों का भी विशेष महत्व है। षहिंदी भारतवर्ष के लोगों से जितनी जुड़ी है,उतनी ही आज बहुत से देशों के लोगों से जुड़ चुकी है।ष्विश्व हिंदी सम्मेलन से जितना भारतीय लगाव रखते हैं उससे कहीं बढ़कर प्रवासी भारतीय भावनात्मक रूप से जुड़ते हैं। इस सम्मेलन में पूरी दुनिया से लोगआतेहैं जिनमें सिर्फ हिंदी भाषा भाषी ही नहीं अपितु ग़ैर हिंदी भाषा–भाषी विद्वत मंडल भी सम्मिलित होता है। पहला विश्व हिंदी सम्मेलन 10 जनवरी से 14 जनवरी सन 1975 तक नागपुर में आयोजित किया गया। सम्मेलन का आयोजन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के तत्वाधान में हुआ। सम्मेलन से संबंधित राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष उपराष्ट्रपति श्री बी.डी. जत्ती थे। पहले विश्व हिंदी सम्मेलन का बोध वाक्य था – वसुधैव कुटुंबकम 30 देशों के कुल 22 प्रतिनिधियों ने इस प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लिया। 28 अगस्त से 30 अगस्त सन 1976 को दूसरे विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में हुआ। मॉरीशस के प्रधानमंत्री शिवसागर रामगुलाम इसके आयोजक थे। भारत के अलावा इस सम्मेलन में 17 देशों के 181 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। 28 अक्टूबर से 30 अक्टूबर सन 1983 को तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन भारत की राजधानी दिल्ली में हुआ। इसमें 260 विदेशी प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इस सम्मेलन के समापन की मुख्य अतिथि महादेवी वर्मा थीं। अपने उद्‌गार उन्होंने इन शब्दों में व्यक्त किए –ष भारत के सरकारी कार्यालयों में हिंदी के कामकाज की स्थिति उस रथ जैसी है जिसमें घोड़े आगे की बजाय पीछे जोत दिए गए हों। चौथा विश्व हिंदी सम्मेलन 17 वर्षों के पश्चात पुनः मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुइ में 2 दिसंबर से 4 दिसंबर के बीच आयोजित किया गया। इसमें 200 विदेशी प्रतिनिधियों ने भाग लिया। पांचवा विश्व हिंदी सम्मेलन पोर्ट ऑफ स्पेन त्रिनिदाद एवं टोबैगो की राजधानी में 4 अप्रैल सन 1996 में आयोजित हुआ। सम्मेलन का केंद्रीय विषय था – प्रवासी भारतीय और हिंदी। सम्मेलन में भारत से 17 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल व अन्य देशों के 257 प्रतिनिधियों ने प्रतिभाग किया। इसमें मुख्य विषय के अलावा अन्य विषयों को भी शामिल किया गया – हिंदी भाषा और साहित्य का विकास कैरेबियाई द्वीपों में हिंदी की स्थिति एवं कंप्यूटर युग में हिंदी की उपादेयता। 14 सितंबर से 18 सितंबर 1999 को छठा विश्व हिंदी सम्मेलन लंदन में आयोजित किया गया। सम्मेलन का मुख्य विषय था – हिंदी और भावी पीढ़ी। भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व तत्कालीन विदेश राज्य मंत्री वसुंधरा राजे ने किया । प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. विद्यानिवास मिश्र इस के उपनेता थे । इस सम्मेलन का ऐतिहासिक महत्व है क्योंकि यह हिंदी के राजभाषा बनाए जाने के 50 वर्ष में आयोजित किया गया था। यही वर्ष संत कबीर की छठी

जन्मशती का भी था। सम्मेलन में 21 देशों के 700 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इन में भारत से 350 और ब्रिटेन से 250 प्रतिनिधि शामिल हुए।

सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन 5 जून से 9 जून सन 2003 को सूरीनाम की राजधानी पारामारिबो में हुआ । जिसका मुख्य विषय था – विश्व हिंदीरू नई शताब्दी की चुनौतियां। इसमें भारत के 200 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया, इसका नेतृत्व तत्कालीन विदेश राज्य मंत्री दिग्विजय सिंह ने किया। संयुक्त राज्य अमेरिका की राजधानी न्यूयॉर्क में आठवां विश्व हिंदी सम्मेलन 13 जुलाई से 15 जुलाई सन 2007 को आयोजित हुआ। इस सम्मेलन का मुख्य विषय था – विश्व मंच पर हिंदी। 22 सितंबर से 24 सितंबर सन 2012 तक दक्षिण अफ्रीका के शहर जोहानेसबर्ग में नौवां विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित हुआ। सम्मेलन स्थल का नाम गांधीग्राम रखा गया था। इस सम्मेलन के विभिन्न सत्रों के नाम सत्य, अहिंसा, शांति, नीति, और न्याय रखे गए थे। दसवां विश्व हिंदी सम्मेलन भोपाल में 10 से 12 सितंबर को भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा आयोजित किया गया।भारत में यह आयोजन सन 1983 के पश्चात लगभग 32 वर्षों के अंतराल पर किया गया । इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य था हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार को नई दिशा प्रदान करना। 18 से 20 अगस्त 2018 कोई 11वां विश्व हिंदी सम्मेलन मारीशस सरकार के सहयोग से मॉरीशस में आयोजित हुआ इस सम्मेलन में भारत के सभी राज्यों से प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

वस्तुतः वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा का प्रचार–प्रसार करना ही इन सम्मेलनों का मुख्य उद्देश्य है। विश्व में हिंदी से जुड़े लोगों की तादाद तीसरे नंबर पर है। भूमंडलीकरण के दौर में वैज्ञानिक तौर पर यह साबित हो गया है कि संपूर्ण विश्व एक परिवार है। भारत की सभ्यता एवं संस्कृति को जानने की उत्सुकता लोगों में जितनीअब तकआई है उतनी पहले कभी नहीं रही परंतु भारत की आत्मा को समझने के लिए हिंदी का ज्ञान परम आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिंदी के निर्माता, डॉक्टर कुमुद शर्मा, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2006, पृष्ठ 100.
2. अर्चना पैन्यूली, प्रवासी हिंदी साहित्य : अपेक्षाएं, वर्तमान साहित्य, 2006, अंक प्रथम, पृष्ठ 45.
3. हिंदी की विश्वव्यापी (गंगा प्रसाद विमल)।
4. वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में भाषा और साहित्य – डॉक्टर माधव सोनटक्के, प्रोफेसर डॉ. अंबादास देशमुख देशमुख
5. दैनिक जागरण उत्थान को तरसती हिंदी अरविंद कुमार 19 सितंबर 2014.
6. हिंदी साहित्य सम्मेलन का इतिहास (प्रथम खंड) नरेश मेहता. पृष्ठ 312.
7. राजभाषा हिंदी, सेठ गोविंद दास, पृष्ठ 57.
8. संक्षिप्त हिंदी साहित्य, श्री ज्योति प्रसाद मिश्र (निर्मल) पृष्ठ 187.
9. कादंबिनी सितंबर 2016, अरविंद कुमार पृष्ठ 45.

*****